पद्य खण्ड

हिन्दी साहित्य का इतिहास

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में साहित्य का महत्व निरूपित करते हुए कहा है- 'प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्त वृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है।' स्पष्ट है कि जनता की चित्तवृत्तियाँ और उनसे रचित साहित्य इतिहास की कालपरक स्थितियों,विचार धाराओं के अनुरूप होता है।

हिन्दी साहित्य के 1000 वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन करने में स्पष्टत: ज्ञात होता है कि विस्तार और विविधता की दृष्टि से इसका सीमांकन जटिल है । हिन्दी साहित्य का आरंभ विद्वानों ने सातवीं शताब्दी से स्वीकार किया है किन्तु व्यवस्थित व प्रामाणिक रूप सन 1000 ई॰ से प्राप्त होता है। इस आरंभिक काल को विद्वानों ने आदिकाल,वीरगाथाकाल,चारणकाल,रासोकाल, अपभ्रंशकाल का नाम दिया है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का प्रथम प्रयास फ्रेंच विद्वान 'गार्सा द तासी' ने किया। इसी परम्परा में श्री शिवसिंह सेंगर ने शिवसिंह सरोज (संवत 1883) नामक इतिहास सम्बन्धी ग्रंथ लिखा । जनवरी 1929 में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास ' ग्रंथ लिखा।

हिन्दी का यह पहला ग्रंथ है जिसमें अत्यन्त सूक्ष्म एवं व्यापक दृष्टि विवेचन एवं विश्लेषण मिलता है।आचार्य शुक्ल के पश्चात आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी साहित्य उद्‌भव और विकास , हिन्दी साहित्य का आदिकाल रचनाएँ लिखीं। इसके अतिरिक्त डॉ॰ रामकुमार वर्मा का हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (1938) तथा डॉ॰ धीरेन्द्र वर्मा के हिन्द सम्पादन में 'हिन्दी साहित्य ' उल्लेखनीय ग्रन्थ है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार कालों में विभक्त किया गया है, जो निम्नानुसार है:-

आदिकाल(वीरगाथा काल)	संवत् 1050 से 1375
पूर्व मध्यकाल(भक्तिकाल)	संवत् 1375 से 1700
उत्तर मध्यकाल(रीतिकाल)	संवत् 1700 से 1900
आधुनिक काल	संवत् 1900 से अब तक

हिन्दी साहित्य का यह विभाजन आचार्य शुक्ल ने काल की मुख्य प्रवृत्तियों के आधार पर किया है। नामकरण व काल की सीमा तथा साहित्य में निरन्तर वृद्‌धि को दृष्टिगत रख इतिहास के पुनर्लेखन की भी बात उठी है क्योंकि आधुनिक काल की समयसीमा निश्चित नहीं है। इसलिए कुछ विद्वानों ने इसे 1850 से स्वीकार किया है। इस प्रकार आधुनिक काल जिसमें गद्य की प्रमुखता है अब तक है।

आदिकाल (संवत 1050 से 1375)

पृष्ठभूमि-

आदिकालीन साहित्य,राजनीतिक दृष्टि से छोटे-छोटे सामंतों में विभक्त राज्यों अथवा प्रदेशों का साहित्य है। सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु विक्रम संवत् 704 में हुई। इसके पश्चात किसी ने केन्द्रीय सत्ता स्थापित नहीं की वरन् खण्ड-खण्ड राज्य स्थापित हुए जो आधिपत्य के लिए युद्ध कर रहे थे। इनमें मुख्य तोमर, राठौर, चौहान, चालुक्य और चंदेल

थे। १०वीं शताब्दी के आसपास अपभ्रंश का प्रभाव क्षीण हो रहा था, और हिन्दी भाषा उसका स्थान ले रही थी इसलिए आदिकाल का साहित्य अपभ्रंश-हिन्दी का साहित्य है। प्राप्त सामग्री किसी निश्चित भाषा विषय में बँधी हुई नही हैं, फिर भी इस युग की सामग्री को इस तरह विभाजित किया गया है:-

1-विजयपाल रासो

2-हमीर रासो

3-कीर्ति लता

4-कीर्ती पताका

5-पृथ्वीराज रासो

6-जयचन्द्र प्रकाश

7-जय मयंक जस चंद्रिका

8-परमाल रासो

9-खुमान रासो

10-बीसलदेव रासो

11-खुसरो की पहेलियाँ

12-विद्यापति पदावली

लौकिक साहित्य आदिकाल की विशेष उपलब्धि है। इसमें 'ढोला-मारू रादूहा' खुसरो की पहेलियाँ उल्लेखनीय हैं। आदिकाल में गद्य साहित्य भी उपलब्ध होता है जिसमें राउलवेल, 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' और 'वर्ण रत्नाकर' उपलब्ध है।

आदिकाल का महत्व

आदिकाल हिन्दी साहित्य का प्रादुर्भाव काल है । इस काल का साहित्य के इतिहास में भाषा और साहित्य - चेतना की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है । भाषा की दृष्टि से आदिकाल में उस भाषा का जन्म हुआ, जो बाद में क्रमश: विकसित होती हुई आज शासन की दृष्टि से राजभाषा और जनता की दृष्टि से राष्ट्र भाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। साहित्यिक दृष्टि से यह युग अत्यन्त समृद्ध रहा है। इस काल में काव्य के विषय अत्यन्त व्यापक थे। भक्ति , वीरता,लोकजीवन, शृंगार आदि इस युग के प्रमुख काव्य-विषय थे। इस युग में प्रबंध और मुक्तक के साथ-साथ गद्य साहित्य का प्रादुर्भाव हुआ। परवर्ती हिन्दी साहित्य को विषय वस्तु एवं शिल्प-विधान की दृष्टि से आदिकालीन साहित्य ने लम्बे समय तक प्रभावित किया ।

भक्तिकाल (संवत 1375 से 1700)

भक्ति काल हिन्दी साहित्य का स्वर्णिम काल माना जाता है। इस काल में लगभग 300 वर्ष तक व्याप्त भक्ति आन्दोलन अखिल भारतीय था। इसमें विभिन्न वर्गों, वर्ण व्यवस्था,सामाजिक भेदभाव , कर्मकाण्ड के विरुद्ध आन्दोलन दिखाई पड़ता हैं। जिसमें धर्म के रूढ़ और साधनात्मक रूप की अपेक्षा भावनात्मकता से परिपूर्ण एक मानवीय भाव दिखाई पड़ता है जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है। यह भाव-बिन्दु ही भक्ति आन्दोलन का केन्द्रीय बिन्दु था । इस आन्दोलन का ऐतिहासिक आधार क्या है यदि इस दृष्टि से विचार करें तो सर जार्ज ग्रियर्सन ने ईसाई धर्म के प्रचार के

कारण इसे उत्पन्न माना तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दू जनता में मुगल शासन व अत्याचार के कारण उत्पन्न निराशा व असहाय भाव मन:स्थिति से जुड़ा माना किन्तु गहराई से विचार करें तो भक्ति आन्दोलन मूलत: धार्मिक, सांस्कृतिक स्वरूप पर आधारित था जिसका आधार मानवीय मूल्य थे। यह सिद्धान्त कि ईश्वर के समक्ष सभी मनुष्य एक समान है इस आन्दोलन का प्रमुख आधार था। इसलिए भक्ति काल में विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग के भक्त कवि हैं, जो उस समाज की संरचना में योग देते हैं जिसमें जर्जर मान्यताएँ, रूढ़ परम्पराएँ, बाह्य, आडम्बर नहीं हैं। मनुष्य-मनुष्य के बीच कोई भेद और विषमता नहीं है। आपस में विश्वास और प्रेम है।

लोक भाषा से जुड़े भक्ति आन्दोलन के सूत्र गौतम बुद्ध की लोक वाणी, सिद्धों, नाथों की सर्व साधारण भाषा और महात्मा रामानन्द की जन भाषा में दिए उपदेश व भक्ति में खोजे जा सकते हैं।

भक्ति आन्दोलन को प्रमुख रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है:-

1- निर्गुण काव्य धारा

2- सगुण काव्य धारा

पुन: इन दो भागों को चार अन्तर्विभागों में विभाजित किया गया :-

निर्गुण धारा :-1-ज्ञान मार्गी शाखा, 2-प्रेम मार्गी शाखा

सगुण धारा :-1-राम भक्ति शाखा , 2- कृष्ण भक्ति शाखा

निर्गुण काव्य धारा और सगुण काव्य धारा में अन्तर केवल इतना है कि निर्गुण काव्य धारा के मत में **ईश्वर** निराकार है , वह अवतार नहीं लेता । सगुण काव्य धारा ईश्वर की लीलाओं व अवतार पर विश्वास करती है किन्तु दोनों धाराएँ ईश्वर के कृपालु , दयामय,करुणायुक्त स्वरूप को स्वीकार करती हैं।

1-निर्गुण काव्य धारा-

ज्ञान मार्गी शाखा- निर्गुण काव्य धारा में बाह्य,आडम्बर की तुलना में आंतरिक शुद्धता पर जोर दिया गया है। इन कवियों ने परमार्थिक सत्ता की एकता निरूपित कर जीवन को अत्यन्त सरल, निर्मल, स्वाभाविक बनाने के लिए उपदेश दिए। ज्ञान मार्गी काव्य धारा में जाति भेद, वर्ण भेद को दूर करने वाले पद, साखी, और नीति के दोहे मिलते हैं जो भक्ति की परिभाषा 'हरि को भजे सो हरि का होई' मानते थे।

इस धारा के प्रमुख कवि थे :- कबीर, दादू दयाल, गुरु नानक, रैदास, सुन्दरदास, रज्जब आदि।

कबीर इस धारा के प्रमुख कवि थे ।

इस धारा के प्रमुख कवियों पर विभिन्न साधनाओं का प्रभाव है। भाषा के लोक प्रचलित रूप का प्रयोग है। नाथ, सिद्धों और हठयोग की शब्दावली का उपयोग भी किया गया है ।

प्रेममार्गी शाखा – सन्त कवियों की ज्ञानमार्गी धारा के साथ ही सूफी या प्रेममार्गी शाखा की परम्परा भी दृष्टिगत होती है, जिसमें मुसलमान सन्त कवि सम्मिलित थे। इन कवियों ने भारतीय अद्वैतवाद में प्रेम का संयोग कर रहस्यमयी वाणी में प्रेम गाथाएँ लिखी, जिनमें भारतीय लोक गाथाओं को आधार बनाया गया था।

लौकिक प्रेम के माध्यम से इन कवियों ने अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति की।

व्यावहारिक जीवन में हिन्दुओं और मुसलमानों की एकता स्थापित करने में इन कवियों ने विशेष सहायता पहुँचाई। इनकी रचनाओं में मानव मात्र को स्पर्श करने वाली, मानव से सहानुभूति रखने वाली उदार भावनाएँ थीं। दोहा चौपाई या मसनवी शैली में सूफी सन्त कवियों ने अपने आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति की।

इस परम्परा के प्रमुख कवि है- जायसी, कुतबन, मंझन, आलम, उसमान, शेख रहीम, नसीर आदि।

प्रमुख ग्रंथ है- पद्‌मावत, मृगावति, मधुमालती आदि।

सूफी कवियों ने जीव को ब्रह्म का अंश माना। गुरु की महत्ता स्वीकार कर वे मानते थे कि संसार के अज्ञान से गुरु का ज्ञान दीपक ही मुक्ति दिला सकता है। प्रेम, विरह का सशक्त चित्रण इस काव्य धारा में हुआ।

2-सगुण काव्य धारा-

भक्ति आन्दोलन में निर्गुण काव्य धारा के साथ सगुण भक्ति धारा भी मिलती है। इसका मूलाधार था कि मनुष्य का मन अस्थिर व चंचल होता है जिसे एकाग्रता के लिए अवलंबन की आवश्यकता है। अतः ईश्वर का साकार व मूर्त रूप आवश्यक है।

सगुण काव्य धारा भी दो भागों में विभक्त है-

रामभक्ति शाखा:- इस शाखा में वैष्णव मत को स्वीकार कर 'विष्णु' के अवतार रूप को महत्व दिया गया है। इसमें 'राम' के जीवन चरित्र को आधार बनाया गया तथा इनके माध्यम से समाज को आदर्श मूल्यों, स्वस्थ गुणों, सामाजिक, पारिवारिक मूल्यों की शिक्षा देने का प्रयत्न किया गया । इस शाखा में वैष्णव-शैव समुदाय का सम्मिलन करने का प्रयत्न किया गया ।

इस शाखा के प्रमुख कवि तुलसीदास, अग्रदास, नाभादास हैं।

प्रमुख ग्रंथ - रामचरित मानस, दोहावली, गीतावली, विनयपत्रिका, अष्टयाम (अग्रदास), भक्तमाल (नाभादास) रामचंद्रिका (केशवदास) हैं।

कृष्ण भक्ति शाखा:- कृष्ण भक्ति शाखा में कृष्ण के चरित्र को आधार बनाकर काव्य रचना की गई। कृष्ण भक्ति धारा में कृष्ण के प्रति वात्सल्य भाव, बाल लीलाएँ, साख्य भाव, माधुर्य भाव की व्यंजना हुई। इस धारा में अष्ट-छाप के कवि, जिनमें कुंभनदास, परमानन्द दास, सूरदास, कृष्णदास, गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास, नन्ददास प्रसिद्ध है। कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवियों में सूरदास, मीरा, रसखान हैं।

प्रमुख ग्रंथ में सूरसागर, सूरसारावली, साहित्यलहरी, राग कल्पद्रुम, रासपंचाध्यायी, मीरा बाई की पदावली, प्रेम वाटिका आदि है।

भक्ति आन्दोलन की विशेषताएँ-

1-भक्ति आन्दोलन में एकता भाव को प्रमुख रूप से स्वीकार किया गया। रामानन्द की शिष्य परम्परा में तुलसीदास और कबीर को समान रूप से स्थान मिला। यहाँ तक कि 'मीरा' के गुरु रैदास माने जाते हैं। तुलसीदास की रामचरित मानस में भील, किरात, वन्य जातियाँ राम के साथ सम्मान पाती है।

2-ईश्वर के समक्ष सभी को एक माना गया। भक्ति आन्दोलन में वैचारिक आधार स्वरूप ऊँच-नीच, जाति व वर्ण-भेद के स्थान पर केवल मनुष्यता को स्वीकार किया गया है।

3-भक्ति आन्दोलन में जाति के स्थान पर केवल भक्ति और भक्त को स्वीकृति मिली। कबीर ने तो 'न हिन्दू न मुसलमान' ईश्वर की प्राप्ति के लिए केवल मानवीय गुण -सद्‌गुण, प्रेम, सहिष्णुता, पावन हृदय, सादे जीवन को महत्व दिया।

4-भक्ति आन्दोलन में रूढ़ियों, अंधविश्वासों का निषेध मिलता है। सभी संत कवियों ने धार्मिक आडम्बरों से मुक्त रहने को महत्व दिया तथा कर्मकाण्डों का विरोध किया।

5-भक्ति काल में विविधकलाओं जैसे वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला को सांस्कृतिक स्तर पर

महत्व मिला। कला क्षेत्र में भी समन्वय की प्रवृत्ति थी।

6–लोक चेतना को महत्व देने के कारण सन्त कवियों ने लोक भाषाओं को महत्व दिया। महाकाव्यों में शास्त्रीय शैली तथा भक्ति पदों में सादे शब्दों में तथा मिश्रित भाषा में अभिव्यक्ति मिलती है। अवधी और ब्रज भाषा में रामचरित मानस, सूर सागर जैसे महाकाव्यों की रचना हुई।

निष्कर्ष रूप में भक्तिकाल समन्वय परक, लोक चेतना तथा सदाशयता से पूर्ण काल था।

रीतिकाल (संवत 1700 से 1900)

हिन्दी साहित्य के मध्यकाल का द्वितीय भाग रीतिकाल के नाम से जाना जाता है। इसका समय संवत 1700 से 1900 (1643 से 1843 ई.) तक माना है। इस काल की प्रमुख प्रवृत्ति 'शृंगार' थी अत: इसे शृंगार काल भी नाम दिया गया किन्तु 'रीतिकाल' नाम अधिकांश विद्वानों ने स्वीकार किया। रीतिकाल इसे लक्षण ग्रंथों के कारण कहा गया। रीतिकाल का युग सामंतों और राजाओं का युग था। रीतिकाल के अधिकांश कवि राजाओं के दरबार में आश्रित कवि थे। अत: राजाओं को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने शृंगार प्रधान रचनाएँ लक्षण ग्रंथों के रूप में लिखीं। प्रमुख प्रवृत्ति रीति निरूपण और शृंगार थी किन्तु राजाओं की प्रशस्ति, भक्ति और नीति सम्बन्धी काव्य रचनाएँ भी हुई।

इस काल को तीन अन्तर्भागों में बाँटा जा सकता है:–

1–रीतिबद्ध कवि, 2–रीतिमुक्त कवि, 3–रीतिसिद्ध कवि

रीतिबद्ध कवि:– इस धारा के कवियों ने अलंकार, नायिका भेद आदि के लक्षण व उदाहरण के साथ काव्य रचना की। इनमें प्रमुख कवि थे– केशव, पद्माकर, मतिराम आदि।

रीतिसिद्ध कवि:– इस धारा में वे कवि हैं जो लक्षण, उदाहरण की पद्धति प्रकट रूप में नहीं अपनाते किन्तु रचना करते समय उसका ध्यान रखते है। बिहारी का काव्य इस दृष्टि से उल्लेखनीय है।

रीतिमुक्त कवि:– इस धारा के कवि स्वच्छन्द अथवा स्वतंत्र प्रवृत्ति को अपनाते है जैसे घनानन्द, आलम, बोधा, ठाकुर। इन कवियों के काव्य में रीतिबद्ध परम्परा से मुक्त काव्य आंतरिक अनुभूति से जुड़ा मिलता है जिसमें कृत्रिमता नहीं है वियोग या प्रेम वर्णन व्यथा प्रधान है।

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं :–

1– लक्षण ग्रंथों की रचना।

2– लौकिक शृंगार की व्यंजना।

3– कला पक्ष की प्रधानता–शृंगार रस की प्रधानता तथा छंद,कवित्त सवैया,दोहा का प्रयोग किया गया।

4– प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण।

5– मुक्तक काव्य रचना। (कालिदास हजारा, सुन्दरी तिलक में रीतिकालीन मुक्तकों का संकलन है)

6– वीर काव्य भी लिखे हैं (भूषण वीर रस के श्रेष्ठ कवि थे।

7– ब्रज मिश्रित अवधी भाषा का प्रयोग, किन्तु काव्य की भाषा मुख्यत: ब्रजभाषा थी।

8– नीति और भक्ति संबंधी काव्य रचनाएँ भी की गई।

इन कवियों में वृन्द, बैताल, आलम, गुरू गोविन्दसिंह, गिरिधर, दीनदयाल गिरि का नाम महत्वपूर्ण है।

रीतिकाल में प्रमुख रूप से दो प्रकार के साहित्य का निर्माण हुआ, राजाश्रय प्राप्त साहित्य और लोक साहित्य।

राजाश्रय प्राप्त साहित्य दरबारी कवियों द्वारा लिखा गया था और लोक साहित्य भूषण, लाल, सूदन द्वारा लिखा गया। प्रथम में विलास की गंध थी दूसरे में वीरत्व की सजग भावना।

इस काल में नीतिपरक, भक्तिपरक और वीर काव्य की भी रचना हुई। काव्य भाषा प्रमुख रूप से ब्रजभाषा थी, किन्तु परिवेश के कारण फारसी का भी प्रभाव था। काव्यांग व अलंकारों का बाहुल्य होने के कारण रीतिकाल का अभिव्यंजना पक्ष तथा शिल्प महत्वपूर्ण था ।

हिन्दी साहित्य के रीतिकाल में मध्यप्रदेश के कवियों का विशेष योगदान रहा। इस काल के श्रेष्ठ कवियों में केशव, बिहारी, रसनिधि, पद्माकर, भूषण, चिन्तामणि, लालकवि, महाराज छत्रसाल एवं अक्षर अनन्य का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

केशवदास:– ओरछा नरेश इन्द्रजीतसिंह के दरबारी कवि थे। इन्हें राजगुरु के रुप में भी सम्मानित किया गया था। ये रीतिकाल के प्रथम आचार्य और महाकवि थे। केशव की भाषा बुन्देली मिश्रित ब्रज भाषा है।

पद्माकर:– पद्माकर ने सुगरा, दतिया, सागर, ग्वालियर में राजाश्रय पाया था। यहाँ सभी जगह उन्हें बहुत सम्मान मिला था। पद्माकर काव्य रीति के उत्कृष्ट ज्ञाता और रससिद्ध कवि थे। इसलिए उनका अलंकार निरूपण, रस निरूपण एवं नायिका भेद निरूपण सहृदय समाज में सदैव आकर्षण का केन्द्र रहा है।

भूषण:– हिन्दी साहित्य के रीतिकालीन श्रृंगार की चकाचौंध से परे भूषण की ख्याति वीर रस के कवि के रूप में है। भूषण की उपाधि ही इन्हें चित्रकूट के राजा रूद्र ने दी थी। बुन्देलखण्ड के महाराज छत्रसाल के यहाँ भूषण को बहुत सम्मान मिला था। उनकी कविता का प्रेरक तत्व धन लिप्सा और श्रृंगारी मनोवृत्ति नहीं थी बल्कि एक देशभक्त एवं अपार सात्विक साहस सम्पन्न व्यक्ति के प्रति श्रद्धा का अतिरेक था।

बिहारी:– बिहारी का जन्म ग्वालियर के पास बसुआ गोविन्दपुर में हुआ था। इन्होंने हिन्दी साहित्य में 'बिहारी सतसई' जैसी कृति देकर बहुत गौरव बढ़ाया है। इसमें 719 दोहे हैं। एक–एक दोहे में बिहारी ने इतना चमत्कार भर दिया है कि उसमें कवियों की कल्पना शक्ति की बेजोड़ झलक दिखाई देती है।

चिन्तामणि:– चिन्तामणि महाकवि भूषण के बड़े भाई थे। राजा महाराजाओं के यहाँ इनका बहुत सम्मान था ।

लालकवि:– इनका पूरा नाम गोरेलाल पुरोहित था। आप महाराज छत्रसाल के दरबारी कवि थे। ये कवि से बुन्देलखण्ड के राजा हो गए थे।

रसनिधि:– रसनिधि का असली नाम पृथ्वीसिंह था। ये दतिया राज्य के अन्तर्गत जागीरदार थे। इनके द्वारा रचित 'रतन हजारा' अद्भुत ग्रंथ है।

पद्य खण्ड

कविता का स्वरूप

आचार्य विश्वनाथ ने रसयुक्त वाक्य को कविता कहा है (वाक्यं रसात्मकं काव्यम्) तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मतानुसार, 'जो उक्ति हृदय में कोई भाव जाग्रत कर दे या उसे प्रस्तुत वस्तु या तथ्य की मार्मिक भावना में लीन कर दे वह काव्य है।' किसी कविता को पढ़ते या सुनते समय आनंद की जो अनुभूति होती है, साहित्य मे इसे रस कहा जाता है।

कविता के दो पक्ष होते है:–

(क)–भाव पक्ष (आंतरिक पक्ष):– भाव पक्ष के अंतर्गत भाव सौन्दर्य, अप्रस्तुत योजना, नाद सौन्दर्य, संगीत तत्व, शब्द सौन्दर्य, चित्रात्मकता, विचार सौन्दर्य आदि आते हैं। इनके द्वारा कविता की पूर्ण छवि हमारे समक्ष आती है।

पाश्चात्य विद्वानों ने कविता के चार तत्व माने हैं:- भाव, बुद्धि, कल्पना और शैली।

(ख)-कला पक्ष (बाह्य पक्ष)- कलापक्ष के अंतर्गत लय, तुक, शब्द योजना, भाषा, गुण, अलंकार एवं छंद आदि आते हैं। कविता का विषय व्यापक एवं बहुआयामी होता हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने काव्य के दो भेद माने हैं - शक्ति काव्य एवं कला काव्य।

काव्य के रूप - हिन्दी साहित्य में काव्य के दो रूप मिलते है:-

(क) प्रबंध काव्य (ख) मुक्तक काव्य।

प्रबंध काव्य के अन्तर्गत (अ) महाकाव्य (ब) खण्ड काव्य (स) आख्यानक गीत

(अ) महाकाव्य:- महाकाव्य की कथावस्तु सर्गबद्ध होती है तथा एक सूत्र में बंधी रहती है। इसमें जीवन के समग्र रूप का वर्णन किया जाता है तथा प्रमुख रूप से वीर, शृंगार एवं शांत रस पाए जाते हैं तथा सर्ग के अंत में छंद बदल जाता है। 'रामचरित मानस, कामायनी, साकेत एवं कुरूक्षेत्र' आदि हिन्दी के प्रमुख महाकाव्य हैं।

(ब) खण्ड काव्य :- खण्ड काव्य में जीवन के एक पक्ष या रूप का वर्णन किया जाता है। कथा में एक सूत्रता रहती है। यह अपने आप में पूर्ण होता है। 'पंचवटी, जयद्रथ वध, सुदामा चरित' आदि हिन्दी के प्रमुख खण्डकाव्य हैं।

(स) आख्यानक गीत:- महाकाव्य एवं खण्ड काव्य से भिन्न पद्यबद्ध कहानी को आख्यानक गीत कहते हैं। इसमें शौर्य, पराक्रम, त्याग, बलिदान, प्रेम, करुणा आदि मानवीय भावों के प्रेरक एवं उद्बोधक घटना चित्र प्रस्तुत किए जाते हैं। नाटकीयता एवं गीतात्मकता इसकी प्रमुख विधाएँ हैं। सुभद्राकुमारी चौहान द्वारा लिखित 'झाँसी की रानी' एवं मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित 'रंग में भंग' हिन्दी के प्रमुख आख्यानक गीत हैं।

(ख) मुक्तक काव्य :- मुक्तक काव्य के भी दो भेद माने गए हैं:-

(अ) पाठ्य मुक्तक :- पाठ्य मुक्तक में विभिन्न विषयों में लिखी गई छोटी-छोटी विचार प्रधान कविताएँ आती हैं। इनमें भावों की अपेक्षा विचारों की प्रधानता होती है। कबीर, तुलसी, रहीम, बिहारी, मतिराम के नीतिपरक, भक्तिपरक एवं शृंगार परक दोहे इसके उदाहरण हैं।

(ब) गेय मुक्तक :- इसको प्रगीत भी कहते है। इनमें भावना और रागात्मकता एवं संगीतात्मकता की प्रधानता होती है। कबीर, तुलसी, सूर, मीरा के गेय पद तथा आधुनिक युग के प्रसाद, निराला, पंत तथा महादेवी वर्मा आदि की कविताएँ इसी श्रेणी की हैं।

***